लेख 1

बालमन की अभिव्यक्ति और हिंदी कहानियाँ

मेहराज अली*

आधुनिकता की दौड़ में मनुष्य आज इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपने परिवार और संतान के लिए भी समय नहीं रह गया है। ऐसी स्थिति में परिवार का एक सदस्य जो इस आधुनिकता से अनजान है, इन सबके मध्य अपना बचपन खो बैठता है। अकेलापन, घुटन, मानसिक पीड़ा उसके मित्र बन जाते हैं। कहीं भूख, कहीं बेबसी, कहीं माँ-बाप की कमी, कहीं पारिवारिक कलह उसके लिए परेशानी की स्थिति पैदा कर देते हैं। हालात यह है कि बालक सामान्य बच्चे से प्रौढ़ व्यक्ति में परिवर्तित हो जाता है। उसका बचपन खेल-खिलौनों, शरारत के स्थान पर परिस्थितिगत द्वंद्व के मध्य बीतने लगता है। उसका यह अकेलापन ही उसके प्राकृतिक मानसिक विकास को अवरुद्ध करके उसके चरित्र को विघटित कर देता है। प्रस्तुत लेख में बालमन की इन्हीं अवस्थाओं और उनकी अभिव्यक्ति के स्वर को हिंदी कहानियों के विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

हिंदी में 'कहानी' गद्य लेखन की एक विधा है। उन्नीसवीं सदी में गद्य में एक नई विधा का विकास हुआ जिसे कहानी के नाम से जाना गया। बंगला में इसे 'गल्प' कहा जाता है। कहानी ने अंग्रेज़ी से हिंदी तक की यात्रा बंगला के माध्यम से की। कहानी गद्य कथा साहित्य का एक अन्यतम भेद तथा उपन्यास से भी अधिक लोकप्रिय साहित्य की विधा है। मनुष्य के जन्म के साथ ही साथ कहानी का भी जन्म हुआ और कहानी कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। इसी कारण से प्रत्येक समाज में कहानियाँ पाई जाती हैं। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लंबी और संपन्न परंपरा रही है। हिंदी साहित्य के संदर्भ में इसका आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में होता है। किंतु अपनी प्रकृति के कारण यह साहित्यिक रूप ग्रहण न कर पाई। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में तथा *सरस्वती* पत्रिका के प्रकाशन पश्चात् हिंदी कहानी को वास्तविक साहित्यिक रूप प्राप्त होने लगा।

हिंदी कहानी का विषय क्षेत्र लगभग सभी अनुशासनों से रहा है, जिसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संबंध समाज से जुड़ा हुआ है। समाज के प्रत्येक अंग चाहे वह स्त्री हो, पुरुष हो, बालक हो, अन्य संबंध

* टी-146/बी-1, द्वितीय तल, सनातन धर्म मंदिर, बलजीत नगर, नयी दिल्ली-110008

हो, कोई सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, मानसिक समस्या हो आदि सभी का चित्रण हमें हिंदी कहानियों में दिखाई देता है। हिंदी कथा साहित्य में जहाँ एक ओर स्त्री-पुरुष संबंधों, बुजुर्गों और परिवारों की समस्याओं का चित्रण किया गया है, वहीं दूसरी ओर बाल मानसिकता या बाल-केंद्रित कहानियाँ हिंदी साहित्य में मुखर रूप से नहीं दिखाई देती हैं। साहित्य में कुछ ही चुनिंदा रचनाकार ऐसे हैं जिनके साहित्य में हमें बाल-केंद्रित कहानियाँ दिखाई देती हैं। कथा साहित्य में देखें तो प्रारंभ में प्रेमचंद के यहाँ हमें 'ईदगाह' और 'बड़े भाईसाहब' जैसी कहानियों में बालमन की झाँकी दिखाई देती है। इसके पश्चात् प्रसाद जी की 'छोटा जादूगर', जैनेन्द्र की 'खेल', 'अपना-अपना भाग्य', अज्ञेय की 'सेब और देव', राजेंद्र यादव की 'भय', मृणाल पांडे की 'खेल' आदि कहानियाँ ऐसी हैं जिसमें बाल जीवन की विभिन्न समस्याओं, जिज्ञासा, कुंठा आदि का चित्रण किया गया है।

बालमन अनगढ़ जिज्ञासाओं से भरा, स्थिति को समझने का प्रयास करने वाला होता है। बालक के व्यक्तित्व को बनाने में सामाजिक-सांस्कृतिक व भौगोलिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियाँ, तनावग्रस्त वातावरण आदि परिस्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग की अपनी-अपनी समस्या होने के साथ ही साथ उस वर्ग के बालक की समस्याएँ भी भिन्न-भिन्न ही होती हैं। बालक को जन्म देकर माता-पिता की भूमिका तो व्यक्ति निभा रहे हैं, किंतु जिस ढंग से उसकी परवरिश होनी चाहिए उस ढंग की परिस्थितियाँ उसे प्राप्त नहीं हो पा रही हैं। उच्च वर्ग के पास समय का अभाव है तो मध्यम और निम्न वर्ग के पास समय और धन दोनों का अभाव है, फिर भी मध्यम वर्ग के बालकों को अर्थाभाव उतना नहीं अखरता जितना माता-पिता का समयाभाव। लेकिन निम्न वर्ग के बालकों को न तो माता-पिता का समय ही मिलता है और न ही आर्थिक संपन्नता, उन्हें अगर कुछ मिलता भी है तो केवल विपन्नता, दुख, दर्द, भूख, बाल मज़दूरी आदि। परिवार के अतिरिक्त इनका एक और संसार होता है—विद्यालय। जहाँ इन्हें अपनी भावनाओं और इच्छाओं को प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होता है। किंतु यहाँ भी शिक्षकों की लापरवाही और बच्चों के प्रति उनका सख्त रवैया, बालकों को अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं के प्रस्तुतीकरण में बाधा उत्पन्न करते हैं। बाल मानसिकता का चित्रण करने वाली कहानियों में हमें ये सभी स्थितियाँ दिखाई देती हैं। कहीं बालक अभावों में पलता है, कहीं बचपन में ही माता-पिता को खो देता है तो कहीं परिवार के विघटन की स्थिति है।

हिंदी कहानियों में बचपन से लेकर किशोरावस्था तक के बालकों का चित्रण मिलता है। प्रेमचंद की 'ईदगाह', 'बड़े भाईसाहब', जैनेन्द्र की 'खेल', यशपाल की 'फूलों का कुर्ता', चन्द्र किशोर जायसवाल की 'बच्चे', मृणाल पांडे की 'खेल', निर्मल वर्मा की 'दूसरी दुनिया' आदि कहानियों में बचपन की बालसुलभ जिज्ञासा, अनगढ़ता देखने को मिलती है। इन कहानियों में बालमन की जिज्ञासु, बेबाक, अभाव के कारण दूसरे की वस्तु पर मुग्ध हो जाने की प्रवृत्ति दिखलाई पड़ती है। बालमन की विघटन की स्थिति भी हमें कुछ कहानियों में दिखायी देती है। किस प्रकार एक कम उम्र का बालक

प्रौढ़ व्यक्ति की भाँति सोचने-विचारने लगता है, खेल-कूद जैसी शारीरिक क्रियाओं के स्थान पर बालक मस्तिष्क का प्रयोग करने लगता है। तब वह बालक न रहकर एक प्रौढ़ व्यक्ति हो जाता है और ऐसा करने के लिए उसे पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक स्थितियाँ मजबूर करती हैं। बालक खेल की बजाय चिंतन की अवस्था में पहुँचता है। अकेलापन, घुटन आदि स्थितियाँ उस पर हावी हो जाती हैं, जिसके कारण बचपन की चंचलता, अनगढ़ता कहीं खो जाती है जिससे उसका चरित्र बनने से पहले ही विघटन की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। बालक के इसी चारित्रिक विघटन को दर्शाती हुई कहानियों में मोहन राकेश की 'एक और जिंदगी' जिसमें बालक माता-पिता के संबंध विच्छेद के कारण स्वभावगत कुंठित हो जाता है। उसका विकास सही दिशा में नहीं हो पाता। बड़ा होने के पश्चात् भी उसमें तुतलाने की आदत स्वभावत: बनी रहती है। इसके अतिरिक्त सुधा अरोड़ा की 'महानगर की मैथिली', प्रतिमा वर्मा की 'एक सुबह और' ऐसी कहानियाँ हैं, जिनमें किशोर होते बच्चे के मानसिक द्वंद को सामने रखने की कोशिश की गई है। इसमें किशोरावस्था के बच्चों के मन में उठने वाले भाव, दिन में कुछ नया घटित होने की चाह, प्यार पाने की चाह, किसी का गुस्सा न सहन करने की आदत आदि भाव अभिव्यक्त किए गए हैं। बड़े होते बच्चों की मानसिकता कई सवाल पैदा करती है, जिनको केवल प्यार के माध्यम से ही समझाया जा सकता है। कठोर अनुशासन उनके स्वभाव को विद्रोही ही बनाता है, जिससे बालक में हीन ग्रंथियों का विकास होता है। रमेश गुप्त की 'स्माइली' एक ऐसे बच्चे की कहानी है, जिसे समयाभाव के कारण घर से दूर हॉस्टल में रहना पड़ता है। उसके माता-पिता आधुनिकता और धन की चाह में बेटे की मानसिकता की परवाह नहीं करते। हॉस्टल में उसके दोस्त भी नहीं बन पाते हैं। अकेलेपन और प्यार की कमी को बालक बर्दाश्त नहीं कर पाता और अंतत: मृत्यु का वरण कर लेता है।

आर्थिक और पारिवारिक स्थिति को समझकर बड़ों के समान आचरण करने वाले बाल चरित्र भी कुछ कहानियों में दिखाई देते हैं। इस प्रकार की कहानियों में सबसे पहले नाम 'ईदगाह' कहानी का आता है, जिसमें बालक बचपन में खिलौने के स्थान पर घर के लिए उपयोगी वस्तु को अधिक महत्त्व देता है। इसी प्रकार घर की स्थिति को समझकर बड़ों के समान व्यवहार करने वाले चरित्र हमें जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर', जैनेन्द्र की 'अपना-अपना भाग्य', अपर्णा टैगोर की 'उधार में मिला सुख', स्वदेश दीपक की 'महामारी' आदि कहानियों में देखने को मिलते हैं जिसमें बालक उम्र से पहले ही पारिवारिक परिस्थितियों के वशीभूत होकर बड़ों के समान व्यवहार करने लगते हैं। 'उधार में मिला सुख' कहानी में बालक घर में मेहमान के आने पर स्वयं ही जाकर पड़ोसी से पैसे उधार माँग लाता है, तो वहीं दूसरी ओर 'महामारी' कहानी में छोटी बच्ची घर की आर्थिक स्थिति का आकलन करते हुए स्वयं ही अपनी खाने-पीने की ज़रूरतों को कम करने की बात कहती है। आर्थिक अभाव में बचपन को खोकर पेट भरने के लिए मज़दूरी करते बच्चों को ध्यान में रखकर कुछ कहानियाँ लिखी गई हैं, जिनमें

जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर', अमरकांत की 'बहादुर', जैनेन्द्र की 'अपना-अपना भाग्य', जवाहर सिंह की 'कुकुरमुत्ते' आदि कहानियाँ आती हैं। इन सभी कहानियों में बच्चे कम उम्र में ही धन का अभाव होने के कारण घर से कहीं दूर किसी होटल या घर में नौकर बनकर अपना जीवनयापन करते हैं। बचपन के खेल-कूद, मस्ती के जीवन से अनजान ये बालक कब बचपन को खोकर बड़े हो जाते हैं, उनका मानसिक विकास किस दिशा की ओर होता है, बालमन की इन सभी दशाओं, मानसिक द्वंद्वों का चित्रण इन सभी कहानियों में किया गया है।

पूर्वोक्त हिंदी कहानियों में दृष्टिगत होते बाल चरित्र, उनकी मानसिकता तथा समय के अभाव और अंधानुकरण के इस दौर में व्यस्त होते जीवन और जीविकोपार्जन की समस्या के मध्य गायब होते बचपन तथा उसके चारित्रिक विघटन, आज सामाजिक व्यवस्था पर एक प्रश्न करते प्रतीत होते हैं। बच्चों के मानसिक पटल को समझने हेतु ज़रूरी है कि उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी जाए। उन्हें इस बात की छूट दी जाए कि वे जो सोचते हैं, जैसा सोचते हैं, उसे प्रस्तुत करें और अभिव्यक्त करें। इसके साथ ही बालक के निरंतर चारित्रिक विघटन के पीछे परिवर्तित होती मानसिकता और उसके कारणों की खोज कर उन्हें दूर करने का प्रयास यदि परिवार अथवा अभिभावक न कर सकें तो शिक्षक का यह दायित्व है कि वह उसे केवल शिक्षित ही न करें बल्कि उसकी इस प्रकार की सहायता भी करें। आखिर वे कौन-सी ऐसी परिस्थितियाँ और कारण हैं जिनकी वजह से बालक अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को त्यागकर एक बड़े उम्र के व्यक्ति के समान तनाव, चिंताग्रस्त जीवन जीने को मजबूर हो जाता है। बालक के चारित्रिक विघटन के पीछे प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों कारणों की खोज कर उनका समाधान करना अभिभावक के साथ-साथ शिक्षक का भी दायित्व है।

बालमन अनगढ़ और नादान होता है। हमारा कर्तव्य है कि उन्हें सही दिशा प्रदान करें। ज़रूरी है कि स्वयं को उनसे बड़ा बताने के बजाए उनसे मित्रता की जाए। अपनी समझ और सूझ-बूझ से उनके बालमन को सही दिशा प्रदान की जाए।

संदर्भ

अवस्थी, देवीशंकर. 1973. *नयी कहानी — संदर्भ और प्रकृति*. राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद.

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

मधुरेश. 2004. *हिंदी कहानी का विकास*. सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद.

यादव, राजेन्द्र. 2000. *कहानी-स्वरूप और संवेदना*. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

वर्मा, प्रीति. और डी. एन. श्रीवास्तव. 2014. *बाल मनोविज्ञान — बाल विकास*. श्रीविनोद पुस्तक मंदिर, दिल्ली.

शुक्ल, रामजीलाल. 1947. *मनोविज्ञान और जीवन*. नंदकिशोर एंड ब्रदर्स, वाराणसी.